1857 का विद्रोह

⇒ भारत पर ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के लगभग 100 साल बाद भारतीय जनमानस की पहली सशक्त प्रतिक्रिया 1857 का विद्रोह था।

⇒ यह प्रतिक्रिया पिछले 100 वर्षों की ब्रिटिश गतिविधियों का स्वाभाविक परिणाम था।

⇒ ब्रिटिश कम्पनी की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सैनिक नीति ने भारतीयों को विद्रोह करने के लिए बाध्य कर दिया।

⇒ 10 मई 1857 को मेरठ से यह विप्लव शुरु हुआ जो धीरे-धीरे दिल्ली, अवध, बिहार, कानपुर बरेली झाँसी इत्यादि क्षेत्रों में फैल गया।

⇒ इस विद्रोह की शुरुआत एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुआ था। कालान्तर में इसका स्वरूप में बदलाव होकर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध जनव्यापी विद्रोह बन गया।

1857 के विद्रोह के कारण

- आधारभूत कारण
  - राजनीतिक कारण
  - प्रशासनिक कारण
  - सामाजिक कारण
  - आर्थिक कारण
  - धार्मिक कारण
  - सैन्य कारण
- तात्कालिक कारण

राजनीतिक कारण :

• वेलेजली की सहायक संधि :- भारतीय राजाओं को अपने राज्य में कम्पनी की सेना रखनी पड़ती थी। सहायक संधि कर लेने से राजाओं की स्वतंत्रता न के बराबर रह गया तथा कम्पनी का हस्तक्षेप बढ़ने लगा।

Scanned with CamScanner

◉ लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पने नीति या व्यपगत का सिद्धान्त (Doctrine of Lapse) के द्वारा हिन्दु राजाओं के दत्तकपुत्र लेने की प्रथा समाप्त कर दिया वैध उत्तराधिकारी होने की स्थिति में राज्यों को अंग्रेजी राज्य में विलय कर लिया जाता था।

इस दौरान :- सतारा 1848, जैतपुर, संबलपुर 1849
बघाट 1850, उदयपुर 1852
झांसी 1853, नागपुर – 1854
करौली – 1855, अवध 1856

B.O.C तेनापल — कुशासन

◉ भारत के बहुत बड़े क्षेत्र पर कम्पनी ने अपना प्रत्यक्ष नियंत्रण कर लिया।

◉ पेशवा का पेंशन रोका जाना। etc

प्रशासनिक कारण :-

1. ~~प्रशासनिक के~~ ब्रिटिश के प्रशासनिक व्यवस्था भारतीय व्यवस्था से मेल नहीं खा रही थी।

2. भारतीयों को ब्रिटिश प्रशासन में उच्चे पदों से बाहर रखना

3. प्रशासन के द्वारा कर मुक्त भुमि (TFL) पर कब्जा करने का व्यापक अभियान चलाया गया।

4. प्रशासन के द्वारा तालुकदारों की जमीन जब्त कर ली गई।

5. अंग्रेजो की न्याय प्रणाली पक्षपातपूर्ण, दीर्घावधिक तथा अधिक खर्चीला था।

6. भारतीय जज किसी अंग्रेज की मुकद्दमा नहीं सुना सकते थे।

7. लगातार अकालों की बारबारता ने ब्रिटिश प्रशासनिक तंत्र की पोल खोल दिया।

सामाजिक कारण

① भारतीयों के सामाजिक व्यवस्था में बदलाव करने की कोशिश।
② भारतीयों को हेय दृष्टि से देखते थे।
③ भारतीयों के साथ शिकार पर जाते समय अंग्रेज अधिकारी व सैनिक दुर्व्यवहार करते थे।
④ पाश्चात्य शिक्षा भी भारतीय समाज की मूल विशेषताओं को समाप्त कर दिया था।

धार्मिक कारण :-

1: ईसाई मिशनरियों को भारत में ईसाई धर्म प्रचार प्रसार के लिए छूट दे दिया गया।
② 1850 में आये धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम द्वारा ईसाई धर्म को ग्रहण करने वाले को पैतृक संपत्ति में अधिकार मिल गया।
③ ईसाइयों द्वारा जबरदस्ती भारतीयों का धर्म परिवर्तन करवाना।
④ ईसाई धर्म हिन्दू व मुस्लिम धर्म से सर्वश्रेष्ठ साबित करने का प्रयास।

आर्थिक करण

① धन निष्कासन की प्रक्रिया।
② ब्रिटिश भू-राजस्व नीतियाँ।
③ नगदी फसलों पर ज़ोर परिणामतः खाद्यान्न फसलों में कमी
④ निरंतर कर व्यवस्था में बढ़ावा।
⑤ हस्त शिल्पों का विनाश

Scanned with CamScanner

⑥ ब्रिटिश सत्ता ने भारत को विऔद्योगीकरण के दौर से गुजरने के लिए मजबूर कर दिया।
परिणामतः बेरोजगारी बढ़ने लगा।

⑦ किसानों को नजरअंदाज किया जाना।

सैनिक कारण :

1. ब्रिटिश सैन्य व्यवस्था में भारतीयों को उच्च पदों से बाहर रखा जाता था भले ही वे कितने योग्य हों।

2. ब्रिटिश सैन्य व्यवस्था में समान कार्य के लिए समान वेतन की व्यवस्था नहीं थी।

3. भारतीय सैनिकों को भारतीय प्रतीकों से भी वंचित किया जाता था → पगड़ी बांधना, माथे पर तिलक लगाना आदि (1856 सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम)

4. अवध के विलय के पश्चात उसकी सेना भंग कर दी गई जिससे ये सैनिक [redacted] बेरोजगार हो गए एवं असंतुष्टि का भाव आ गया।

5. 1854 के डाकघर अधिनियम के अनुसार सैनिकों की निःशुल्क डाक सुविधा समाप्त कर दी गई।

6. आंग्ल-अफगान युद्ध (1839-42 ई०) से लौटे भारतीय सैनिकों को उनकी जाति में वापस स्वीकार नहीं किया गया और उन्हे जाति बहिष्कृत कर दिया गया

7. क्रिमिया युद्ध (1853-56) में भारतीय सैनिकों का मनोबल गिरा क्योंकि युद्ध अनिर्णित रहा था इससे उन सैनिकों में असन्तोष उत्पन्न हुआ।

Scanned with CamScanner

तात्कालिक कारण

⇒ Dec 1856 में सरकार ने पुरानी लोहे वाली बन्दूक 'ब्राउन बेस' के स्थान 'न्यू इनफील्ड राइफल' के प्रयोग का निश्चय किया। इसमें प्रयोग होते कारतूस के ऊपरी भाग को मुख से काटना पड़ता था।

⇒ बंगाल सेना में यह अफवाह फैली कि इस चर्बी वाले कारतुस में गाय और सुअर की चर्बी लगी रहती है। सैनिकों को ऐसा लगा कि इस तरह के कारतुसों का प्रयोग कर अंग्रेज भारतीयों का धर्म भ्रष्ट करना चाहते हैं।

1857 के विद्रोह का प्रारंभ

> 1857 का प्रतीक
> • कमल और रोटी

29 march 1857 ई० को सबसे पहले बैरकपुर के 34वें रेजिमेंट के सैनिक मंगल पाण्डेय के नेतृत्व में सैनिकों ने कारतुस भरी राइफल को प्रयोग करने से मना कर दिया।

⇒ उसने सैन्य अधिकारी लें० बाग एवं मेजर सार्जेन्ट को गोली मारकर हत्या कर दिया।

⇒ 8 Apl 1857 को मंगल पाण्डेय को फाँसी दे दिया गया
↳ (NCERT → 29 mar 1857)

⇒ उस समय बैरकपुर के कमांडिंग ऑफिसर हैरसे था

⇒ 9 मई 1857 को मेरठ में भी 85 सैनिकों ने कारतुस प्रयोग करने से इन्कार कर दिया। अंग्रेजो ने इन्हे 10-10 वर्ष का कारावास की सजा दी।

⇒ 10 मई 1857 को सैनिकों ने खुला विद्रोह कर दिया। और अपने साथियों को मुक्त करवाकर दिल्ली के लिए बढ़े। यह विद्रोह मेरठ से शुरु हुआ।

⇒ 11 मई को दिल्ली पहुँचा और

⇒ 12 मई को क्रांतिकारियों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया और अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को बादशाह-ए-हिन्दुस्तान घोषित किया।

Scanned with CamScanner

विभिन्न क्षेत्रों से विद्रोह का नेतृत्व करता एवं अंग्रेज दमनकारी।

दिल्ली

~~बहादुरखाँ~~/बहादुरशाह II — निकल्सन, हड्सन

जफरबख्त

=> 11 मई को दिल्ली पहुँचा 12 मई को दिल्ली पर कब्जा कर लिया। यहाँ का कमान बहादुरशाह को दिया गया। किन्तु वास्तविक नेतृत्व जफरबख्त कर रहा था

=> अंग्रेजों ने कड़ा विरोध किया जिसमें निकल्सन मारा गया अन्ततः अंग्रेजों ने पुनः Sep 1857 में दिल्ली पर कब्जा किया तथा बादशाह को बन्दी बना लिया गया और उसके पुत्र तथा पौत्र को हड्सन ने गोली मरवा दी इसके बाद बहादुरशाह को रंगून भेज दिया गया 1862 में उसकी मृत्यु हो गई।

लखनऊ

बेगम हजरत महल (महक परी) — कॉलिन कैम्पबेल

बिरजिस कादिर

=> 4 जून 1857 को लखनऊ से इस विद्रोह का कमान बेगम हजरत महल ने सम्भाली। इन्होंने अपने पुत्र बिरजिस को नवाब घोषित किया।

=> हेनरी लॉरेंस मारा गया कॉलिन ~~और~~ कैम्पबेल ने गोरखों के सहायता से March 1858 में लखनऊ पर कब्जा कर लिया।

Scanned with CamScanner

कानपुर

नाना साहेब (धोंदू पंत) — कॉलिन कैम्पबेल

तात्या टोपे (रामचन्द्र पांडुरंग)

=> चिनहट के पास तात्या टोपे ने अंग्रेजी सेना को परास्त कर दिया और हेवलॉक को मार गिराया। कर्नल नील भी लखनऊ में मारा गया।

=> 5 June 1857 को कानपुर पर विद्रोहियों ने अधिकार कर लिया। ~~[illegible]~~ नानासाहब नेतृत्व कर रहे थे यहाँ पर उसकी सहायता तात्या टोपे ने किया।

=> अन्तत कैम्पबेल ने अधिकार कर लिया नाना साहेब नेपाल चला गया। और तात्या टोपे झाँसी पहुँचा।

झाँसी → ग्वालियर

रानी लक्ष्मी बाई — जनरल ह्यूरोज

तात्या टोपे

(रानी लक्ष्मी बाई) जन्म (वाराणसी) मृत्यु (ग्वालियर)

=> 7 June को क्रांतिकारियों ने झाँसी पर कब्जा कर लिया और लक्ष्मीबाई को राज्यरोहन किया।

=> ह्यूरोज ने लक्ष्मी बाई को पराजीत कर झाँसी पर कब्जा कर लिया लक्ष्मी बाई ग्वालियर पहुँची ~~ब~~ जहाँ तात्या टोपे आ कर मिल गया ग्वालियर दुर्ग में लडते हुई ~~[illegible]~~ लक्ष्मीबाई मारी गई।

तात्या टोपे → इन्होंने गुरिल्ला युद्ध का प्रयोग किया और अंग्रेजो को खुब परेशान किया किन्तु विश्वासघाती मित्र मानसिंह ने उन्हे गिरफ्तार करवा दिया 1859 में ~~म~~ ग्वालियर में फांसी दी गई।

Scanned with CamScanner

बिहार → जगदीशपुर

→ मेजर विलियम टेलर

कुंवर सिंह
अमर सिंह

=> बिहार से कुंवर सिंह नेतृत्व कर रहा था। युद्ध में कुंवर सिंह को हाथ में गोली लग गया और नदी पार करते उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका भाई अमरसिंह ने कमान सम्भाला।

=> अन्ततः टेलर और विंसेंट आयर ने विद्रोह दबा दिया।

फैजाबाद

→ कैम्पबेल / जनरल रेनॉर्ड

मौलवी अहमदुल्ला

इलाहाबाद → बनारस

कर्नल नील

लियाकत अली

=> लार्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था।

बरेली

विंसेंट अय्यर / कैंपबेल

खान बहादुर
↓
(नवाब घोषित)
↓
फाँसी दे दिया गया

राजस्थान → जयदयाल/हरदयाल

उड़ीसा → राजकुमार सुरेंद्र साई → 1862 में आत्मसमर्पण कर दिया → देश से निकाल दिया गया।

रोचक तथ्य

सती चौरा घाट की घटना

=> सती-चौरा घाट के पास अंग्रेजो को सुरक्षित निकलने का आश्वासन नाना साहब ने दिया, जब वहाँ से पास कर रहे थे तो नाना साहब ने उसे धोखे से मार डाला। और अपने-आप को बादशाह का पेशवा घोषित कर दिया। ~~इसके~~

=> विद्रोह के दौरान कई नेताओं का जान चला गया।

विद्रोह के असफलता के कारण :

=> विद्रोह का सीमित स्वरूप

=> निश्चित उद्देश्य का अभाव

=> सीमित साधन

=> देशी नरेशों एंव सामन्तों की अंग्रेज भक्ति
- → पंजाब सिख सरदार
- → कश्मिर के गुलाब सिंह
- → ग्वालियर के सिंधिया और उनके मंत्री दिनकर राव
- → हैदराबाद के सालारजंग, भोपाल के बेगम
- → नेपाल के मंत्री सर जंगबहादुर

कैनिंग — "इन शासकों एंव सरदारों ने तरंग रोधकों का कार्य किया अन्यथा हमें एक एक झोंके में ही बहा दिया होता।"

Scanned with CamScanner

⇒ योग्य नेतृत्व का अभाव

⇒ संगठन का अभाव

⇒ शिक्षित वर्ग की तटस्थानीति

⇒ कृषक वर्ग की उपेक्षा

⇒ अंग्रेजो ~~की~~ के अनुकूल परिस्थितियाँ एवं कुशल नेतृत्व

परिणाम / प्रभाव

⇒ कम्पनी की सत्ता समाप्त

⇒ क्राउन का शासन की शुरुआत

⇒ क्षेत्र विस्तार की नीति का त्याग

⇒ ब्रिटिश मंत्रिमण्डल में एक नया पद भारतीय राज्य सचिव का सृजन किया गया। → इसके सहायता के लिए 15 सदस्यीय सलाहकार समिति बनाई गई

⇒ प्रशासनिक परिवर्तन

- 1861 के कानून के तहत विधान परिषद में तीन भारतीय की नियुक्ति की व्यवस्था।
- 1861 के तहत I.C.S में भारतीयों को शामिल होने का प्रावधान

⇒ सैन्य पुनर्गठन

- Army Amalgamation scheme - 1861 के तहत कम्पनी के यूरोपीय सेना को ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया गया जिसको नए सिरे से गठन किया गया।

Scanned with CamScanner

⇒ यूरोपीय सेना में वृद्धि 40,000 → 65,000
→ भारतीय सेना में कमी
⇒ तोपखाना यूरोपीय के हाथों सौंपा गया।

1857 पर आधारित प्रमुख पुस्तकें

- फर्स्ट वार ऑफ इन्डिपेन्डेंस → विनायक दामोदर सावरकर
- द ग्रेट रिबेलियन → अशोक मेहता
- सिपोय म्यूटिनी एंड द रिवोल्ट ऑफ 1857 – R.C मजूमदार
- 1857 → एस. एन. सेन
- रिबेलियन 1857 → पी. सी. जोशी
- हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी → टी. आर. होम्स
- कॉलेज ऑफ द इंडियन म्यूटिनी → सर सैयद अहमद खान

प्रमुख विचार

- केवल सैनिक विद्रोह और कुछ नहीं → जॉन लारेन्स व सीले
- धर्मान्धों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध → एल ई आर रीज
- बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध → टी आर होम्स
- हिन्दु मुस्लिम षड्यंत्र → जेम्स आउट्रम और टेलर
- राष्ट्रीय विद्रोह → बेन्जामिन डिजरेली
- सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम → वी. डी. सावरकर
- न तो प्रथम, न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम R.C मजूमदार
- जो कुछ धर्म के लिए लड़ाई के रुप में शुरु हुआ वह स्वतंत्रता संग्राम के रूप में समाप्त हुआ। → डा. सेन
- सैनिक व किसानों का सम्मिलित विद्रोह → मार्क्सवादी

Scanned with CamScanner

प्रमुख कमीशन

इनाम कमीशन :- 1854 में डलहौजी ने जमींदारों एवं जागीरदारों की जाँच के लिए बम्बई में ईनाम कमीशन गठित हुआ ।

पील कमीशन 1858 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा सेना के पुनर्गठन के लिए उस कमीशन का गठन किया गया ।

रॉयल कमीशन - सैनिक भर्ती के लिए रॉयल कमीशन का गठन हुआ → (फूट डालो राज करो) जाति, धर्म, समुदाय के आधार पर विभाजन